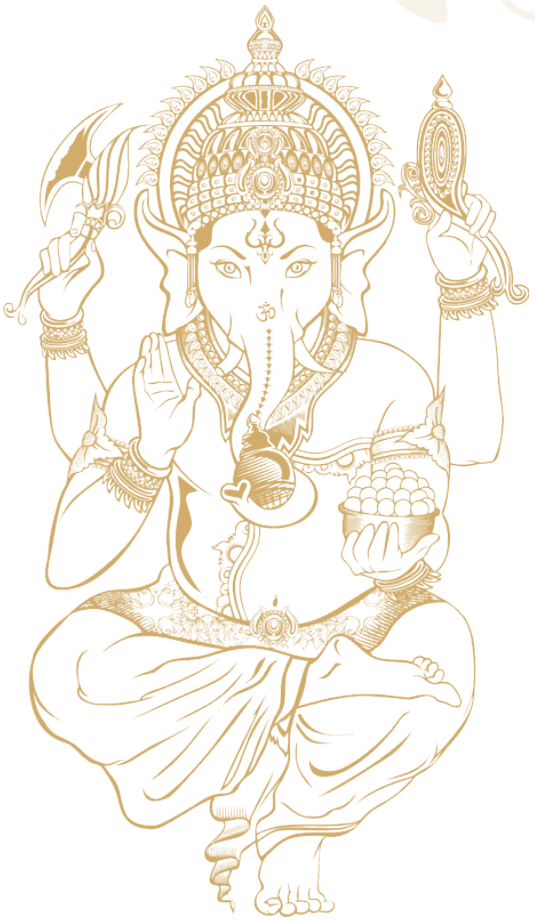

Madhav

Neha

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121153304

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13/06/1995	जन्म तिथि	19-20/08/1999
मंगलवार	दिन	गुरु-शुक्रवार
घंटे 11:00:00	जन्म समय	01:30:42 घंटे
घटी 14:01:05	जन्म समय(घटी)	49:07:42 घटी
India	देश	India
Mathura	स्थान	Mathura
27:30:00 उत्तर	अक्षांश	27:30:00 उत्तर
77:42:00 पूर्व	रेखांश	77:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:12	स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:23:33	सूर्योदय	05:51:37
19:14:24	सूर्यास्त	18:53:44
23:47:46	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:55

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 1वर्ष 5मा 27दि	10:47:00	सिंह	लग्न	मिथु	04:54:07	शनि 8वर्ष 3मा 15दि
सूर्य	27:58:04	वृष	सूर्य	सिंह	02:32:51	केतु
10/12/2023	28:49:44	वृश्चि	चंद्र	वृश्चि	10:50:51	04/12/2024
10/12/2029	15:08:31	सिंह	मंगल	तुला	27:43:19	04/12/2031
सूर्य 29/03/2024	16:36:40	वृष व	बुध	कर्क	15:04:14	केतु 02/05/2025
चन्द्र 27/09/2024	15:14:40	वृश्चि व	गुरु	मेष	11:05:32	शुक्र 02/07/2026
मंगल 02/02/2025	09:18:22	वृष	शुक्र व	सिंह	03:36:00	सूर्य 07/11/2026
राहु 28/12/2025	00:30:42	मीन	शनि	मेष	23:14:23	चन्द्र 08/06/2027
गुरु 16/10/2026	10:52:38	तुला व	राहु	कर्क	19:01:35	मंगल 04/11/2027
शनि 28/09/2027	10:52:38	मेष व	केतु	मक	19:01:35	राहु 21/11/2028
बुध 03/08/2028	06:05:26	मक व	हर्ष व	मक	20:29:27	गुरु 28/10/2029
केतु 09/12/2028	01:13:12	मक व	नेप व	मक	08:29:18	शनि 07/12/2030
शुक्र 10/12/2029	04:48:15	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	13:53:21	बुध 04/12/2031

लग्न-चलित

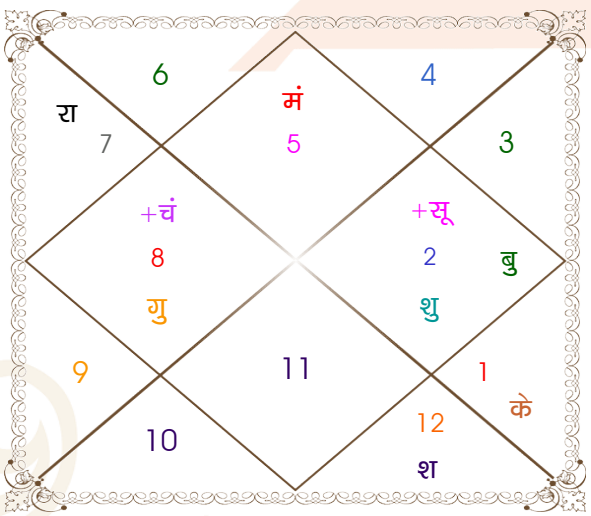

लग्न-चलित

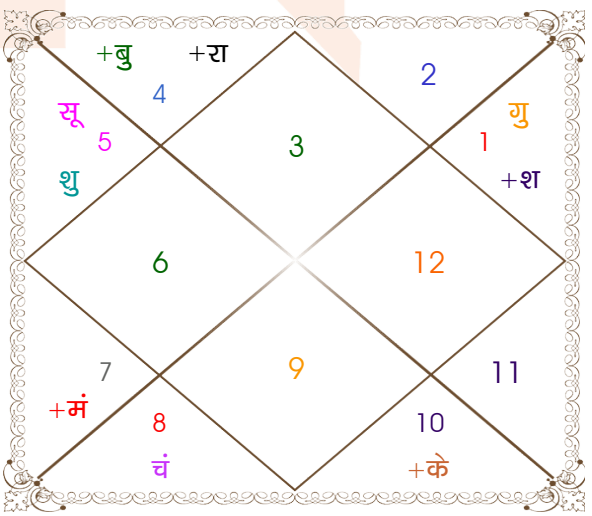

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मृग	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	31.00		

Madhav का वर्ग मृग है तथा छर्मी का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Madhav और छर्मी का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Madhav मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

छर्मी मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि छर्मी कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Madhav तथा छर्मी में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।